P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक दक्षता के मध्य संबंध का अध्ययन

गायत्री जय मिश्रा
सह प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी

वंदना सिंह
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी

सारांश

जन्म से व्यक्ति सामाजिक नहीं होता है,वह अत्यंत असहाय एवं निर्गुण होता है। वह अपने आसपास के वातावरण से जो अनुभव करता है, उसके आधार पर ही उसमें विकास की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। बालक के सामाजिक विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। बालक जिस परिवार में रहता है वह उस परिवार के मूल्यों, आदर्शों के अनुरूप ही विकसित होता है अतः बालक के सामाजिक विकास में एवं उसमें सामाजिक दक्षता के विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक दक्षता के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है। शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ केदुर्ग–भिलाई क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों द्वारा 30 संयुक्त परिवार के पाल्यों एवं 30 एकाकी परिवार के पाल्यों कुल 60 छात्र छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप चयन किया गया। यादृच्छिक विधि न्यादर्श विधि द्वारा लिए गए शोध में लिए चरों व समुहों कं मध्य अंतर का अध्ययन करने हेतु 't' मूल्य ज्ञात किया गया। परिणाम यह दर्शाते हैं कि संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों के सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर नहीं पाया गया। सामाजिक दक्षता में लिंग भिन्नता भी नहीं पाई गई।

मुख्य शब्द : पारिवारिक वातावरण, सामाजिक दक्षता, सामाजिक विकास।

प्रस्तावना

नवजात शिशु असहाय एवं असामाजिक होता है वह ना बोलना जानता है ना चलना ना ही उसका कोई मित्र होता है ना ही शत्रु। बालक एक कोरी किताब होता है, जिसमें जिस तरह की इबारत लिखी जाए, वह उसी में ढल जाता है। परिवार में माता –पिता के संपर्क में अपने अपनों द्वारा दिखाई गई बातों का अनुसरण करता है। उस का प्रथम विद्यालय परिवार ही होता है। किसी जीवित प्राणी के लिए चाहे वह पशु पक्षी जीव जंतु ही क्यों ना हो, किसी न किसी आश्रय की आवश्यकता पड़ती है। परिवार जैसी प्राथमिक एवं सर्वव्यापी सामाजिक संस्था का उद्भव निश्चय मनुष्य की सहज जैविक का आवश्यकताओं और आधारभूत सामाजिक वतियों से हुआ है। इसलिए माना जा सकता है कि परिवार मनुष्यों की संस्था में से एक प्राचीन संस्था है, अतः जब तक मानव जाति रहेगी किसी न किसी रूप में परिवार का अस्तित्व रहेगा मनुष्य के संरक्षण के लिए परिवार से ज्यादा सुरक्षित आश्रय और कोई नहीं। परंपरागत परिदृश्य के विकास सोपानों से परिलक्षित होता है कि सामाजिक संगठन का मूल आधार परिवार ही रहा है। यदि समाज को व्यापक दृष्टि से देखें तो वह व्यक्ति की सोच को विकसित करता है। पुराने समय में व्यक्ति का महत्व उसके परिवार और समाज का सदस्य होने में था, धीरे–धीरे मध्य काल तक परिवार का विकसित रूप देखने को मिलता है किंतु आधुनिक परिवार का विकसित रूप बहुत ही अलग है। मध्य कालसे अब तक परिवर्तित परिस्थितियों के साथ कौटुंबिक जीवन प्रभावित हुआ।

समाज एक परिवार से नहीं बनता उसी प्रकार परिवार एक या दो सदस्यों से नहीं बनता व्यक्ति और समाज के मध्य परिवार एक सेतु की तरह कार्य करता है। परिवार की अनुपस्थिति में व्यक्ति समाज अनभिज्ञ है, व्यक्ति में उच्चतम गुण दया, ममता,प्रेमानुभूति, सहानुभूति का विकास परिवार से होता है। परिवार इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि एक और जहां उसमें एक थकी पीढ़ी आश्रय पाती है वही भावी पीढ़ी का निर्माता भी है। परिवार में ही भूत,वर्तमान,भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है।

जन्म के तुरंत बाद शिशु में परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक व सामाजिक व्यवहार विकसित होता है। जब सामाजिक परिस्थिति इस प्रकार की होती है कि शिशु समाज के नियमों तथा नैतिक मानकों को आसानी से सीख लेता है तो कहा जाता है कि उसमें सामाजिक विकास हुआ है, सामाजिक दक्षता उत्पन्न हुई है। दूसरी तरफ यदि सामाजिक परिस्थितियां ऐसी होती है, जिसमें बालक समाज के नियमों को ठीक से नहीं सीख पाता तो कहा जाता है कि उसमें सामाजिक विकास पूरा नहीं हुआ है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि सामाजिक विकास से तात्पर्य समाज के नियमों के अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता के विकास से है। हरलॉक के (1978) के अनुसार सामाजिक विकास से तात्पर्य सामाजिक प्रथाओं के अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता है। सामाजिक नियमों के अनुकूल व्यवहार करना सीखने को ही सामाजिक दक्षता की संज्ञा दी जाती है।

सामाजिक विकास के अनेक साधनों में परिवार का महत्व अद्वितीय है, क्योंकि परिवार एक प्राथमिक समूह है, अतः इसके सदस्यों जैसे माता–पिता भाई–बहन चाचा–चाची दादा–दादी आदि में एक घनिष्ठ संबंध होता है। उनके सहयोग की भावना अधिक होती है। इन सब का प्रभाव सामाजिक विकास पर अधिक पड़ता है (पीटरसन व लेह 1990)। अनेक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि परिवार ही वह पहली संस्था है, जो बालक को शिष्टाचार नैतिक विकास की शिक्षा देकर उन्हें एक योग्य एवं सामाजिक व्यक्ति बनाता है। परिवार में बालक की सबसे पहली अंतर्क्रिया माता–पिता से होती है, अतः या बिल्कुल स्वाभाविक है कि बालकों के सामाजिक विकास में बालकों के साथ माता–पिता द्वारा किया गया व्यवहार अधिक महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिकों ने बालकों के साथ होने वाले माता पिता के व्यवहारों के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया है और इन लोगों का सामान्य निष्कर्ष यही रहा है कि इनके दो पहलू काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इनसे बालकों का सामाजिक विकास एवं उनकी सामाजिक दक्षता सीधे–सीधे प्रभावित होती है।

कुछ माता पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को बहुत अधिक दुलार प्यार इसने अभी देते हैं अतः ऐसे माता–पिता में हार्दिकता अधिक होती है। दूसरी तरफ कुछ माता पिता इसके विपरीत होते हैं आप एक बार बाद में बच्चों को डांटते हो, पीटते हैं, उन्हें गाली देते हैं, अतः से माता–पिता में विद्वेष अधिक होता है। मनोवैज्ञानिक नें इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि जिन माता पिताओं द्वारा बालकों के प्रति हार्दिक पर दिखाई जाती है, उनके बच्चों में सामाजिक शील गुणों एवं सामाजिक व्यवहारों का विकास तेजी से होता है। माता–पिता से विद्वेष पाने वाले बालकों में ऐसे गुणों का विकास नहीं होता माता–पिता से उचित स्नेह मिलने से बालकों में सुरक्षा की भावना, आत्म सम्मान, आत्म विश्वास आदि गुण होते हैं, जिससे उनमें बाद में बहुत तरह के सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार तेजी से विकसित होते हैं। परंतु सामाजिक विकास के लिए सिर्फ माता–पिता का प्यार एवं स्नेह ही आवश्यक नहीं है बल्कि यह भी आवश्यक है कि बालकों द्वारा किए गए व्यवहारों पर माता–पिता का नियंत्रण कितना है। बालकों के व्यवहारों पर नियंत्रण रखने से संबंधित माता–पिता का दो तरह का व्यवहार होता है, कुछ माता पिता काफी प्रतिबंधक स्वभाव के होते हैं,जो शायद ही कभी अपने बच्चों को स्वतंत्र होकर कहीं आने जाने या उन्हें कोई कार्य करने की आजादी देते हैं। दूसरी तरफ कुछ माता पिता काफी अनुज्ञात्मक प्रकृति के होते हैं, जो बच्चों के व्यवहारों पर शायद ही कभी प्रतिबंध लगाते हैं या उन पर कोई नियंत्रण की बात सोचते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इन दोनों तरह के नियंत्रण से समाजीकरण की प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है। माता पिता और बच्चों के बीच अंतर क्रिया के अलावा परिवार के अन्य पहलुओं जैसे उसका कार्य सदस्यों की संख्या, परिवार के भौतिक वातावरण का प्रभाव भी सामाजिक विकास एवं दक्षता पर पड़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी कार्य को सही स्वरूप उद्देश्य के द्वारा ही प्रदान किया जा सकता है। प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता द्वारा निम्न उद्देश्यों का चयन किया गया है –

1. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों के सामाजिक दक्षता के मध्यअंतर का अध्यन करना।
2. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर का अध्ययन करना।
3. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालकों की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर का अध्ययन करना।
4. बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर का अध्ययन करना।
5. संयुक्त परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर का अध्ययन करना।
6. एकाकी परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

इनेस ब्लाएवी (2016) ने बच्चों के सामाजिक विकास को बेहतर ढंग से समझने के लिए अपने शोध में सामाजिक सिद्धांतों को प्रदर्शित किया। छात्रों के सामाजिक विकास पर परिवार, साथियों और स्कूल के प्रभाव महत्वपूर्ण में होते हैं,विशेष रूप से मध्य बचपन की अवधि में।

डनलप एवं पावेल 2009 ने अपने अध्ययन में पाया की सामाजिक क्षमता अत्यधिक उच्च तथा अकेले रहने पर कार्य करने वाले युवाओं में सामाजिक क्षमता अपेक्षाकृत कम होते हैं।

सिंग एवं अन्य (2014) द्वारा किशोरों के सामाजिक और भावनात्मक परिपक्वता पर पारिवारिक संरचना के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि संयुक्त परिवार के उत्तरदाता व्यक्तिगत रूप से, पारस्परिक रूप से और सामाजिक रूप से योग्य थे और इस प्रकार, एकल परिवार के लोगों की तुलना में सामाजिक रूप से परिपक्व थे। इसी तरह, वे

भावनात्मक स्थिरता, भावनात्मक प्रगति, सामाजिक समायोजन पर काफी अधिक थे।

व्यक्तित्व एकीकरण और परमाणु परिवार के लोगों की तुलना में भावनात्मक परिपक्वता का स्वतंत्रता घटक। सामाजिक परिपक्वता और भावनात्मक परिपक्वता को परिवार के प्रकार में काफी सकारात्मक रूप से सहसंबंधित पाया गया।

सील एवं उनके साथियों (2010) ने सामाजिक भावनात्मक विकासः उच्च शिक्षा में सीखने वाले छात्रों का एक नया मॉडल विषय पर अध्ययन कर यह स्पष्ट किया कि सामाजिक और भावनात्मक विकास (एसईडी), एक नया मॉडल है, जिसे भावनात्मक जानकारी, व्यवहार और लक्षणों का उपयोग करने के लिए व्यक्तिगत सामाजिक क्षमताओं को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यक्तिगत क्षमता के वांछनीय, स्थायी वृद्धि के रूप में परिभाषित किया गया है।एसईडी मॉडल, जिसमें आत्म जागरूकता, दूसरों के बारे में विचार, दूसरों से संबंध और परिवर्तन को प्रभावित करना, सामाजिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता और क्षमता विकास के आदान–प्रदान को जोड़ता है। एसईडी का उद्देश्य भावनात्मक संकेतों को पहचानने, भावनात्मक जानकारी की प्रक्रिया करने और उच्च शिक्षा में सामाजिक चुनौतियों के अनुकूल भावनात्मक ज्ञान का उपयोग करने के लिए छात्र सामाजिक और भावनात्मक क्षमता को बढ़ाने और समझने की सुविधा प्रदान करना होता है।

रामलिंगम एवं मणि (2009) इन्होंने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में समुदाय का प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता, जबकि लिंग, धर्म एवं परिवार के प्रकार का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है। महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा अधिक परिपक्वता पाई गई। एकल परिवार की अपेक्षा बहु सम्मिलित परिवार के सदस्यों में अधिक सामाजिक परिपक्वता पाई जाती है।

होली,राबर्ट व अन्य 2007 द्वारा किए अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिक तनाव वाले बालक बालिकाओं में अपेक्षाकृत कम सामाजिक दक्षता पाया जाता है पांच विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति का अभिभावकों की सामाजिक दक्षता श्रेणीयन पर प्रभाव पड़ता है।

भाटिया (2002) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि पारिवारिक संबंधों एवं सामाजिक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया जाता है तथा शाला में अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता में कमी पाई जाती है।

शैलेंद्र सिंह 2000 ने अपने अध्ययन के टॉपिक कंसोर्टियम फॉर रिसर्च ऑन इमोशन में सामाजिक क्षमता तथा भावुकता पर अध्ययन किया और उनके अनुसार सामाजिक क्षमता व भावना में सार्थक संबंध पाया जाता है।

मोन्गा (1996) ने ग्रामीण, स्कूल पूर्व बच्चों की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक परिपक्वता स्तर का अध्ययन किया है और निष्कर्ष प्राप्त किये कि शिक्षित पिताओं के बच्चे अधिक सामाजिक परिपक्व थे। कृषकों के बच्चों में अधिक सामाजिक परिपक्वता का विकास अधिक पाया गया मजदूरों की अपेक्षा। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले बच्चों की सामाजिक परिपक्वता मध्यम और कम सामाजिक आर्थिक स्तर बच्चों की तुलना में उच्च थी।

हैगर व अन्य 1995 द्वारा अधिगम दुर्बलता एवं विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता का अध्ययन किया गया एवं अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि निम्न उपलब्धि तथा अधिगम दुर्बलता वाले विद्यार्थियों में व्यवहार संबंधी समस्या सामाजिक कौशल एवं सामाजिक दक्षता उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पाया जाता है।

ब्रैंनन 1993ने किशोरावस्था में सामाजिक दक्षता का विकास एवं पारिवारिक संबंध पर अध्ययन से यह स्पष्ट किया कि किशोरों में सामाजिक दक्षता उनके गहरे पारिवारिक संबंधों से प्राप्त अनुभवों के परिणाम स्वरुप उत्पन्न होता है।

मेरेल मेर्ज व अन्य 1992 द्वारा अधिगम दुर्बलता मानसिक मंदता व्यवहार विकार निम्न उपलब्धि एवं नियमित शिक्षण से संबंधित विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया और अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुए की नियमित शिक्षण संबंधी विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता अन्य कार्य समूह से अधिक रही बालिकाओं में सामाजिक दक्षता बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

लूथरा एवं जिगलेर (1992) द्वारा उच्च जोखिम वाले किशोरों में बुद्धि एवं सामाजिक क्षमता का अध्ययन किया गया। अपने अध्ययन में इन्होंने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अधिक बुद्धिमान युवाओं में अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक दक्षता पाई गई।

पीटरसन व लेह 1990 ने किशोरों में सामाजिक दक्षता व परिवार विषय पर अध्ययन किया और पाया कि किशोरों में सामाजिक दक्षता पर उनके परिवार से संबंधित कारकों का प्रभाव पड़ता है।

नैनसी व अन्य 1985 ने अपने अध्ययन में पाया की पारिवारिक जुड़ाव का किशोरों की सामाजिक दक्षता के साथ घनात्मक संबंध है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में विस्तार से अध्ययन करने हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया गया है।

1. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों के सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।
2. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।
3. संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालकों की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।
4. बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।
5. संयुक्त परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।
6. एकाकी परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर पाया जायेगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए संभाव्यता न्यादर्श में 'यादृच्छिक विधि' का चयन किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध में उद्देश्य अनुसार यादृच्छिक विधि द्वारा 30 संयुक्त

परिवार के पाल्यों एवं 30 एकाकी परिवार के पाल्यों का चयन अध्ययन हेतु दुर्ग–भिलाई क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से कुल 60 छात्र छात्राओं का चयन न्यादर्श स्वरूप चयन किया गया।

सांख्यकीय विधि

परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांको के आधार पर सार्थकता मान ज्ञात करने के लिए सांख्यिकीय मानों का उपयोग किया गया है। जिसमें मध्यमान मानक विचलन तथा 't' की गणना की गई है जिसकी सार्थकता डिग्री ऑफ फ्रीडम के आधार पर परीक्षित है।

उपकरण

शोधकर्ता द्वारा अपनी शोध समस्या ''संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों की सामाजिक दक्षता का अध्ययन'' हेतु लिए गये न्यादर्श के परीक्षण के लिए प्रोफेसर वीपी शर्मा डॉ किरण शुक्ला डॉ प्रभा शुक्ला द्वारा निर्मित सामाजिक दक्षता मापनी का उपयोग किया गया, जिसमें समस्या से सम्बन्धित 50 कथनों को रखा गया। इस प्रश्नावली को 30 संयुक्त परिवार के पाल्यों एवं 30 एकाकी परिवार के पाल्यों को दुर्ग–भिलाई क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 60 छात्र छात्राओं के विचार जानने हेतु भरने के लिए दिया गया।

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अलग–अलग सारणियों के न्यादर्श का मध्यमान, प्रामणिक विचलन ज्ञात किया और मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 't' ज्ञात करके निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

शोध निष्कर्षो को प्राप्त करने हेतु विश्लेषण प्रक्रिया शोध कार्य का आवश्यक अंग है, जो प्रदत्तों की व्याख्या एवं निष्कर्षों के लिए सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध में विश्लेषण प्रक्रिया को निम्न सारणियों के द्वारा व्यक्त किया गया है।

सारणी क्रंमाक – 1

संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों के सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर :–

क्रं.	समूह	प्रतिदर्श संख्या	Df	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य
1	संयुक्त परिवार के पाल्य	30	58	160.37	20.43	2.25
	एकाकी परिवार के पाल्य	30		149.57	16.62	
2	संयुक्त परिवार के बालिका	15	28	161.93	20.19	1.546
	एकाकीपरिवार के बालिका	15		151.2	17.75	
3	संयुक्त परिवार के बालक	15	28	158.8	21.26	1.586
	एकाकी परिवार के बालक	15		147.93	15.86	

सारणी क्रमांक 1 देखने से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार के पाल्यों की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 160.37 तथा एकाकी परिवार के पाल्यों की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 149.57 है तथा दोनों संयुक्त परिवार तथा एकाकी परिवार के पाल्यों की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 20.43 व 16.62 है।

दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना हेतु 't' ज्ञात किया गया जिसका मान 2.25 है जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 58 पर प्राप्त मान से कम है अतः .01स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना–1 अस्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 1से यह भी स्पष्ट होता है कि ý संयुक्त परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 161.93 तथा एकाकी परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 151.2 है तथा दोनों संयुक्त परिवार तथा एकाकी परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 20.19 व 17.75 एवं 't' का मान 1.546 है जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 28 पर प्राप्त मान से कम है अतः 01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। अत परिणाम से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालिकाओं के सामाजिक दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना–2 अस्वीकृत होती है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालकों की सामाजिक दक्षता का मध्यमान क्रमशः 158.8 तथा 147.93 है तथा दोनों संयुक्त परिवार तथा एकाकी परिवार के बालकों की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 21.26 व 15.86 है। मध्यमानों की तुलना हेतु 't' ज्ञात किया गया जिसका मान 1.586 है जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 28 पर प्राप्त मान से कम है अतः 01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। उपरोक्त परिणामों से यह तथ्य स्पष्ट है कि संयुक्त एवं एकाकी परिवार के बालकों के सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर नहीं है। उपरोक्त सभी परिणामों से परिलक्षित होता है कि परिकल्पना–1,2,3 अस्वीकृत होती हैं।

सारणी क्रंमाक – 2

बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य अंतर :–

क्रं.	समूह	प्रतिदर्श संख्या	Df	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't' मूल्य
4	बालक	30	58	153.36	19.24	0.640
	बालिका	30		156.56	19.46	
5	संयुक्त परिवार के बालक	15	28	158.8	21.26	0.413
	संयुक्त परिवार के बालिका	15		161.93	20.19	
6	एकाकी परिवार के बालक	15	28	147.93	15.86	0.531

	एकाकी परिवार के बालिका	15		151.2	17.75	

सारणी क्रमांक 2 देखने से ज्ञात होता है कि बालकों की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 153.36 तथा बालिकाओं की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 156.56 है तथा दोनों बालकों तथा बालिकाओं की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 19.24 व 19.46 है।

दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना हेतु 't' ज्ञात किया गया जिसका मान 0.640 है जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 58 पर प्राप्त मान से कम है अतः 01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट कि बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना–4 अस्वीकृत होती है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट इंगित होता है कि संयुक्त परिवार के बालकों की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 158.8 तथा संयुक्त परिवार के बालिकाओं की सामाजिक दक्षता का मध्यमान 161.93 है तथा दोनों संयुक्त परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 21.26 व 20.19 तथा't' का मान 0.413 है, जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 28 पर प्राप्त मान से कम है अतः 01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है।

सारणी क्रमांक 2 से यह भी ज्ञात होता है कि एकाकी परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता का मध्यमान क्रमशः 147.93 तथा 151.2 है तथा दोनों एकाकी परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता हेतु प्रमाणिक विचलन क्रमशः 15.86 व 17.75 एवं प्राप्त 't' का मान .0.531 है जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 28 पर प्राप्त मान से कम है अतः 01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट कि एकाकी एवं संयुक्त परिवार के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक दक्षता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार हमारी परिकल्पना–4,5,6 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में संयुक्त एवं एकाकी परिवार के पाल्यों में सामाजिक दक्षता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है, अर्थात दोनों ही प्रकार के परिवारों से संबंधित पाल्यों में सामाजिक दक्षता समान रूप से पाई गई है, साथ ही सामाजिक दक्षता में लिंग के आधार पर विभिन्नता नहीं पाई गई हैं। उपरोक्त परिणाम सिंग एवं अन्य (2014) द्वारा प्राप्त परिणामों से भिन्न है। संभवतया वर्तमान में सामाजिक दक्षता को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों जैसे पास पड़ोस, विद्यालय, सहपाठी एवं सबसे अधिक प्रचार के साधनों का भी प्रभाव दिखाई देता है। जहां पर संयुक्त एवं एकाकी परिवार के दोनों ही पाल्यों में इनका प्रभाव स्पष्ट होता है इनेस ब्लाएवी (2016)। वर्तमान में समाज में बालक एवं बालिकाओं में भेद की प्रवृत्ति में भी कमी आई है, इस कारण भी बालक तथा बालिकाओं के सामाजिक दक्षता में अंतर नहीं पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *इनेस ब्लाएवी (2016) वर्ल्ड जर्नल ऑफ एजुकेशन फॅमिली, पियर आंड स्कूल इन्फ्लुयेन्स ओं चिल्ड्रेनस सोशियल डेवेलपमेंट,6 (2),42–49*
2. *कपिल, एच.के.(1999), अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, 14/230,कचहरी घाट, आगरा, सोलहवाँ संस्करण 1999.*
3. *कुमार डी एस एवं राव एस एन (2009), शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सामाजिक परिपक्वता इंडियन जनरल ऑफ साइकोमेट्रि एंड एजुकेशन*
4. *डेनियल हैदर कैथरीन वाटसन बेल (1995), पेरेंट्स टीचर पियर एंड सर्च रिपोर्ट ऑफ द सोशल कंप्यूटर ऑफ स्टूडेंट्स विथ लर्निंग डिसेबिलिटी सेज जर्नल3,27–33*
5. *डनलप और पावेल (2009) प्रमोटिंग सोशल बिहेवियर ऑफ यंग चिल्ड्रन इन ग्रुप http%@@www-challenging&behaviororg@resource@document @roadmap&3-pdf*
6. *डब्ल्यू. मेरल, केनेत, एम. मर्ज़, जुड़ी,आर. जॉनसन, यूजीन,एन. रिंग, एलिज़ाबेथ. (1992). सोशियल कॉपिटेन्स ऑफ स्टूडेंट्स वित माइल्ड हॅडिकैप्स एंड लो अचीवमेंटः आ कंपॅरटिव स्टडी. स्कूल साइकॉलजी रिव्यू, 21 न1,125–37*
7. *नैंसी जे. बेल, ऑर्थर डब्लू. अवेरी,डेविड जेन्किस,जासन फेल्ड (1995), फैमिली रिलेशनशिप एंड सोशल कॉन्फिडेंस ड्यूरिंग लेट अडोलेसेंस जर्नल ऑफ यूथ एंड एडोलैसेंस,14,109–119*
8. *ब्रेरन जे. एल.(1993), फॅमिली रिलेशन्षिप्स आंड थे डेवेलपमेंट ऑफ सोशियल कॉपिटेन्स इन आडोलेसएन्स, जरनल आफ पीडियेट्र चाइल्ड हेल्थ,29,37–41.*
9. *भार्गव, एम. (1995). मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, 14/230, कचहरी घाट, आगरा, दसवाँ संस्करण 1995*
10. *भाटिया ए एवं सिंह डी (2002), पारिवारिक संबंध एवं सामाजिक परिपक्वता शाला अनुपस्थिति के संबंध में इंडियन जनरल ऑफ साइकाइट्री एंड एजुकेशन, 33(1), 67-72*
11. *माथुर, एस.एस.(1991). शिक्षा मनोविज्ञान, आर.ई. आई. ट्रेनिंग कॉलेज, दयालबाग, आगरा, इक्कीसवाँ संस्करण 1991.*
12. *मोंगा (1996), ग्रामीण स्कूल पूर्व बच्चों की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक परिपक्वता इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू 46-44-49*
13. *राम लिंगम पी एवं मणि पी (2009), प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक परिपक्वता साइको लिंग्वा, 39(2), 168–170*

14. *राय, पारसनाथ.(1999). अनुसंधान परिचय, प्रकाशक– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा, अश्ठम संस्करण 1999*
15. *लूथरा एस एवं जिगलेर ए. .(1992).उच्च जोखिम वाले किशोरों के बीच बुद्धि और सामाजिक क्षमता, डेवलपमेंट एंड साईंकोपैथोलॉजी,4(2),287-299*
16. *शर्मा, आर.ए.(2005). शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुकडिपो, निकट गवर्नमेंट कॉलेज, मेरठ संस्करण 2005.*
17. *सिंग, ऋतु, पंत, कुशा एवं लाइटॉनजाम, वॅलेनटीना. (2014). इंपैक्ट अनॉलिसिसः फॅमिली स्ट्रक्चर आन सोशियल एंड इमोशनल मेचुरिटी ऑफ एडोलेसएंट्स. आनत्रोपॉलजिस्ट. 359–365. 10.1080/09720073. 2014.11891445.*
18. *सिंह, शैलेंद्र (2002), कंसोर्टियम फॉर रिसर्च ऑन इमोशन इंटेलिजेंस इन ऑर्गनाइजेशन, 49, 136 – 141*
19. *सील, क्रेग, ए नाउमॉन, स्टेफनीए, एन स्कॉट, एमी राय्स डेविस, एवं जोवना. (2010). सोशियल एमोशनल डेवेलपमेंटः ए न्यू मॉडेल ऑफ स्टूडेंट लर्निंग इन हाइयर एजुकेशन, रिसर्च इन हाइयर एजुकेशन जर्नल,10,1–13 .*
20. *त्रिपाठी लाल बच्चन (2003), आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान भार्गव बुक हाउस पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन आगरा*